



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 208]
No. 208]

नई दिल्ली, मंगलवार, दिसम्बर 23, 2008/पौष 2, 1930
NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER 23, 2008/PAUSA 2, 1930

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

अधिसूचना

मुम्बई, 23 दिसम्बर, 2008

प्रतिभूति संविदा (विनियमन)
(मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों में सार्वजनिक शेयरधारण को बढ़ाने और
बनाए रखने की रीति) (संशोधन) विनियम, 2008

सं. एलएडी-एनआरओ/जीएन/2008/30/148262.—बोर्ड प्रतिभूति संविदा (विनियमन), 1956 (1956 का 42) की धारा 4ख की उप-धारा (8) के साथ पठित धारा 31 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा प्रतिभूति संविदा (विनियमन) (मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों में सार्वजनिक शेयरधारण को बढ़ाने और बनाए रखने की रीति) विनियम, 2006 का और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :

1. इन विनियमों को प्रतिभूति संविदा (विनियमन) (मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों में सार्वजनिक शेयरधारण को बढ़ाने और बनाए रखने की रीति) (संशोधन) विनियम, 2008 कहा जा सकेगा ।
2. वे राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे ।
3. प्रतिभूति संविदा (विनियमन) (मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों में सार्वजनिक शेयरधारण को बढ़ाने और बनाए रखने की रीति) विनियम, 2006 में :—

- (i) विनियम 2 में, उप-विनियम (1) में, खण्ड (झ) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"(ज) "व्यापारिक अधिकार रखने वाला शेयरधारक" (या "व्यापारिक अधिकार रखने वाले शेयरधारक") से वह शेयरधारक अभिप्रेत है जिसका स्टॉक एक्सचेंज में व्यापारिक हित हो, चाहे प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः व्यापारिक अधिकार रखने वाले व्यक्ति के माध्यम से ।

स्पष्टीकरण : व्यापारिक अधिकार रखने वाले व्यक्ति के संबंध में "अप्रत्यक्षतः" व्यापारिक हित रखने वाले शेयरधारक का वही अर्थ होगा जो इस उप-विनियम के खण्ड (ख) के अधीन व्यापारिक अधिकार रखने वाले शेयरधारक के संबंध में शब्द "सहयुक्त" के लिए नियत है । "

- (ii) विनियम 8 में,

- (क) उप-विनियम (1) के लिए, निम्नलिखित उप-विनियम प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"(1) भारत में निवासी कोई भी व्यक्ति किसी भी समय, प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः, या तो अलग-अलग या सामान्य मति से कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ मिलकर, मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में इक्विटी शेयर पूंजी का पाँच प्रतिशत से अधिक धारण नहीं करेगा :

परंतु यह कि स्टॉक एक्सचेंज, निक्षेपागार, समाशोधन निगम, बैंककारी कंपनी, बीमा कंपनी और कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 4क के अधीन परिभाषित लोक वित्तीय संस्था, या तो प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः, या तो अलग-अलग या सामान्य मति से कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ मिलकर, मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज की समादत्त इक्विटी शेयर पूंजी का पंद्रह प्रतिशत तक धारण कर सकेगी :

परंतु यह और कि मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में इन विनियमों के प्रारंभ पर इस विनियम में विनिर्दिष्ट सीमाओं से अधिक इक्विटी शेयरों को धारण करने वाला व्यक्ति अधिनियम की धारा 4ख की उप-

धारा (8) में विनिर्दिष्ट समय या उसके परंतुक्त के अधीन बढ़ाये गये समय के भीतर इस विनियम का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अपनी धारिता (होल्टिंग) में कमी करेगा ।

स्पष्टीकरण : इस उप-विनियम के प्रयोजनों के लिए :-

(I) "बैंककारी कंपनी" का वही अर्थ होगा जो बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 5 के खण्ड (ग) में इसके लिए नियत है ;

(II) "बीमा कंपनी" का वही अर्थ होगा जो बीमा अधिनियम, 1938 (1938 का 4) की धारा 2 की उप-धारा (8) में इसके लिए नियत है ;

(III) "भारत में निवासी व्यक्ति" का वही अर्थ होगा जो विदेशी मुद्रा प्रबंध अधिनियम, 1999 (1999 का 42) की धारा 2 के खण्ड (फ) में इसके लिए नियत है ;

(IV) "सामान्य मति से कार्य करने वाले व्यक्ति" (या "सामान्य मति से कार्य करते हुए व्यक्ति") का वही अर्थ होगा जो भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (शेयरों का पर्याप्त अर्जन और अधिग्रहण) विनियम, 1997 के विनियम 2 के उप-विनियम (1) के खण्ड (ड) से प्राप्त है । "

(ख) उप-विनियम (1) के पश्चात्, निम्नलिखित उप-विनियम अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"(2) मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज की इक्विटी शेयर पूंजी में भारत के बाहर निवासी सभी व्यक्तियों की संयुक्त धारिता (होल्टिंग), किसी भी समय, इसकी कुल इक्विटी शेयर पूंजी के उनचास प्रतिशत से अधिक नहीं होगी, निम्नलिखित के भी अध्यधीन :-

क) विदेशी प्रत्यक्ष विनिधान मार्ग के माध्यम से अर्जित ऐसे व्यक्तियों की संयुक्त धारिताएँ कुल इक्विटी शेयर पूंजी के छब्बीस प्रतिशत से अधिक नहीं होंगी, किसी भी समय ;

ख) विदेशी संस्थागत विनिधानकर्ताओं की संयुक्त धारिताएँ कुल इक्विटी शेयर पूंजी के तेईस प्रतिशत से अधिक नहीं होंगी, किसी भी समय ;

ग) कोई भी विदेशी संस्थागत विनिधानकर्ता द्वितीयक बाजार के माध्यम से अन्यथा मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के शेयर अर्जित नहीं करेगा यदि ऐसा एक्सचेंज सूचीबद्ध है :

स्पष्टीकरण : इस खण्ड ग) के प्रयोजनों के लिए द्वितीयक बाजार के माध्यम से शेयरों के अर्जन का अर्थ निम्नानुसार लगाया जाएगा :

(I) यदि मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज सूचीबद्ध नहीं है, तो विदेशी संस्थागत विनिधानकर्ता मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के बाहर संव्यवहारों के माध्यम से इसके शेयर अर्जित कर सकेगा परंतु यह शेयरों का आरंभिक आबंटन न हो ;

(II) यदि मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज सूचीबद्ध है, तो विदेशी संस्थागत विनिधानकर्ता द्वारा संव्यवहार उस मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के माध्यम से किए जाएंगे जहाँ ऐसे शेयर सूचीबद्ध हैं ;

घ) किसी भी विदेशी संस्थागत विनिधानकर्ता का मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के निदेशक बोर्ड में कोई प्रतिनिधित्व नहीं होगा ;

ङ) कोई भी विदेशी विनिधानकर्ता, जिसमें उसके साथ सामान्य मति से कार्य करने वाले व्यक्ति सम्मिलित हैं, मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में इक्विटी शेयर पूंजी का पाँच प्रतिशत से अधिक धारण नहीं करेगा । "

(ग) विद्यमान उप-विनियम (2) को उप-विनियम (3) के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा ;

(iii) विनियम 9 में,

- (क) पार्श्व टिप्पण में, शब्दों "एक प्रतिशत" के लिए, शब्द "पाँच प्रतिशत" प्रतिस्थापित किए जाएँगे ;
- (ख) उप-विनियम (1) के लिए, निम्नलिखित उप-विनियम प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

"(1) कोई भी व्यक्ति, प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः, या तो अलग-अलग या उसके साथ सामान्य मति से कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ मिलकर, इन विनियमों के प्रारंभ के पश्चात् मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज की समादत्त इक्विटी पूंजी के पाँच प्रतिशत से अधिक का अर्जन और/या को धारण नहीं करेगा, जब तक कि वह उपयुक्त तथा उचित व्यक्ति न हो और उसने ऐसा करने के लिए बोर्ड का पूर्व अनुमोदन न ले लिया हो।"

सी. बी. भावे, अध्यक्ष

[विज्ञापन III/4/69 जैडबी/2008-असा.]

पाद टिप्पण :

1. प्रतिभूति संविदा (विनियमन) (मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों में सार्वजनिक शेयरधारण को बढ़ाने और बनाए रखने की रीति) विनियम, 2006 भारत के राजपत्र में 13 नवम्बर 2006 को प्रकाशित हुआ था।

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA

NOTIFICATION

Mumbai, the 23rd December, 2008

Securities Contracts (Regulation) (Manner of Increasing
and Maintaining Public Shareholding in recognised Stock Exchanges)
(Amendment) Regulations, 2008

No. LAD-NRO/GN/2008/30/148262.—In exercise of the powers conferred by Section 31 read with sub-section (8) of Section 4B of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956), the Board hereby makes the following regulations to further amend the Securities Contracts (Regulation) (Manner of Increasing and Maintaining Public Shareholding in recognised Stock Exchanges) Regulations, 2006, namely:—

1. These Regulations may be called the Securities Contracts (Regulation) (Manner of Increasing and Maintaining Public Shareholding in Recognised Stock Exchanges) (Amendment) Regulations, 2008.
2. They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

५१४९६१/०८-२

3. In the Securities Contracts (Regulation) (Manner of Increasing and Maintaining Public Shareholding in Recognised Stock Exchanges) Regulations, 2006: -

(i) in regulation 2, in sub-regulation (1), after clause (i) the following clause shall be inserted, namely:-

“(j) “shareholder having trading rights” means a shareholder who has a trading interest in the stock exchange, whether directly or indirectly through a person having trading rights.

Explanation: A shareholder having a trading interest “indirectly” in relation to a person having trading rights shall have same meaning as assigned to the term “associate” in relation to a shareholder having trading rights under clause (b) of this sub-regulation.”

(ii) in regulation 8,

(a) for sub-regulation (1), the following sub-regulation shall be substituted, namely:-

“(1) No person resident in India shall at anytime, directly or indirectly, either individually or together with persons acting in concert, hold more than five per cent. of the equity share capital in a recognised stock exchange:

Provided that a stock exchange, a depository, a clearing corporation, a banking company, an insurance company and a public financial institution defined under section 4A of the Companies Act, 1956 may hold, either directly or indirectly, either individually or together with persons acting in concert, upto fifteen per cent. of the paid up equity share capital of the recognised stock exchange:

Provided further that person holding equity shares in a recognised stock exchange in excess of the limits specified in this regulation at the commencement of these regulations shall reduce his holding to ensure compliance with this regulation within the time specified in sub-section (8) of section 4B of the Act or the time extended under the proviso thereto.

Explanation: For the purposes of this sub-regulation:-

(I) “banking company” shall have the meaning assigned to it in clause (c) of section 5 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);

(II) “insurance company” shall have the meaning assigned to it in sub-section (8) of section 2 of the Insurance Act, 1938 (4 of 1938);

(III) “person resident in India” shall have the meaning assigned to it in clause (v) of section 2 of the Foreign Exchange Management Act, 1999 (42 of 1999);

(IV) “persons acting in concert” shall have the meaning derived from clause (e) of sub-regulation (1) of regulation 2 of the Securities and Exchange Board of India (Substantial Acquisition of Shares and Takeovers) Regulations, 1997.”

(b) after sub-regulation (1), the following sub-regulation shall be inserted, namely:-

“(2) the combined holding of all persons resident outside India in the equity share capital of a recognised stock exchange shall not exceed, at any time, forty-nine per cent. of its total equity share capital, subject further to the following:-

- a) the combined holdings of such persons acquired through the foreign direct investment route shall not exceed twenty six per cent. of the total equity share capital, at any time;
- b) the combined holdings of foreign institutional investors shall not exceed twenty three per cent. of the total equity share capital, at any time;
- c) no foreign institutional investor shall acquire shares of a recognised stock exchange otherwise than through the secondary market if such exchange is listed:
Explanation: For the purposes of this clause c) the acquisition of shares through secondary market shall be construed as follows:
(I) If the recognised stock exchange is not listed, a foreign institutional investor may acquire its shares through transactions outside of a recognised stock exchange provided it is not an initial allotment of shares;
(II) If the recognised stock exchange is listed, the transactions by a foreign institutional investor shall be done through the recognised stock exchange where such shares are listed;
- d) no foreign institutional investor shall have any representation in the Board of Directors of the recognised stock exchange;
- e) no foreign investor, including persons acting in concert with him, shall hold more than five per cent. of the equity share capital in a recognised stock exchange.”

(c) the existing sub-regulation (2) shall be renumbered as sub-regulation (3);

(iii) in regulation 9,

(a) in the marginal note, for the words “one percent”, the words “five per cent.” shall be substituted;

(b) for sub-regulation (1), the following sub-regulation shall be substituted, namely:-

“(1) No person shall, directly or indirectly, either individually or together with persons acting in concert with him, acquire and/or hold more than five per cent. of the paid up equity capital of a recognised stock exchange after commencement of these regulations, unless he is a fit and proper person and has taken prior approval of the Board for doing so.”

C. B. BHAVE, Chairman

[ADVT III/4/69ZB/2008-Exty.]

Footnote: 1. The Securities Contracts (Regulation) (Manner of Increasing and Maintaining Public Shareholding in Recognised Stock Exchanges) Regulations, 2006, was published in the Gazette of India on November 13, 2006.